खण्ड 12, संख्या 4(अप्रैल)2024

पुस्तकालय में नया संग्रह

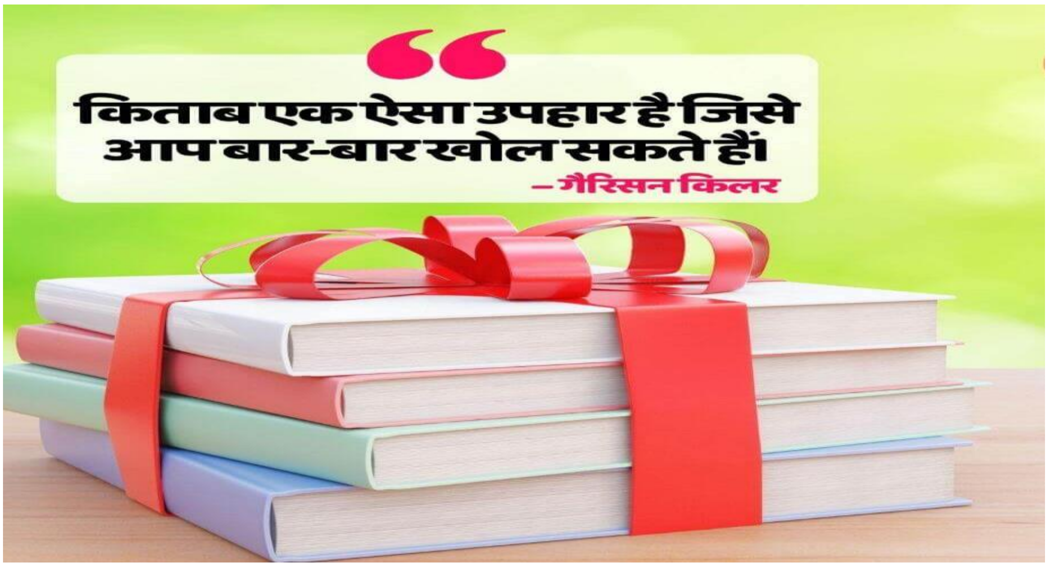

नया संग्रह अप्रैल 2024

द्वारा संकलित

श्री कुमार संजय, निदेशक (पुस्तकालय)

श्रीमती इन्दिरा रानी , सहायक पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी

श्रीमती वर्षा सतीजा ,पुस्तकालय सूचना सहायक

नीति आयोग पुस्तकालय

1.भारत की श्रेष्ठ लोक कथाएँ/ महेश भारद्वाज

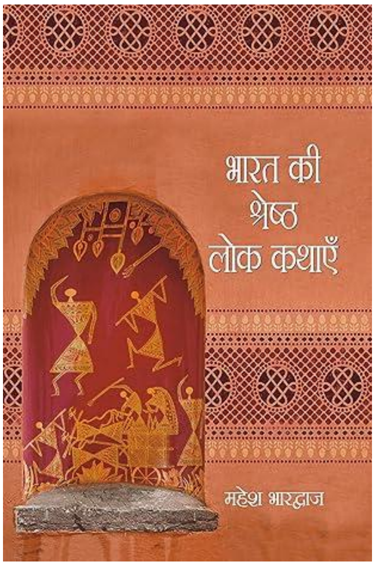

भारत लोक संस्कृति की दृष्टि से एक धनी देश है। यहां हर राज्य, हर क्षेत्र की अलग-अलग पहचान है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी लोक कथाएं हैं। प्रस्तुत पुस्तक में ऐसे ही कुछ लोक कथाओं का संकलन है जो अलग-अलग क्षेत्रों से चुने गए हैं। इससे पाठकों खासकर बच्चों को शक्षा तो प्राप्त होगी ही तथा अपनी संस्कृति का भी उन्हें पता चलेगा।

मानव-समाज में बहुत सी कहानियाँ परंपराओं से चली आ रही हैं। वे मूलतः मौ खक रूप में कही जाती रहीं। उन्हें कब लखा गया अथवा उन्हें कसने लखा, इसका ज्ञान कसी को नहीं है।

इन कहानियों की वशेषता है क इनमें जीवन के सं चत अनुभवों को प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत कया गया है। समय-समय पर लोक जीवन ने जिन अनुभवों को प्राप्त कया, उन्हें सहज, सरल, स्वाभा वक और रोचक भाषा- शैली में कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत कया। इन कहानियों ने अपनी रोचकता, व्यापकता और सार्थकता के कारण तो लोकजीवन में स्थान प्राप्त कया ही, साथ ही शक्षा और उपदेश प्रधान होने के कारण ये जनमानस का अंग बन गईं।

प्रकाशक: सुनील साहित्य सदन

आहवान संख्या: 891.4331 B575B **अ धकरण संख्या: 158027**

2.अमीर ख़ुसरो की सरस और सुबोध पहे लियाँ/प्रीतम प्रशाद शर्मा

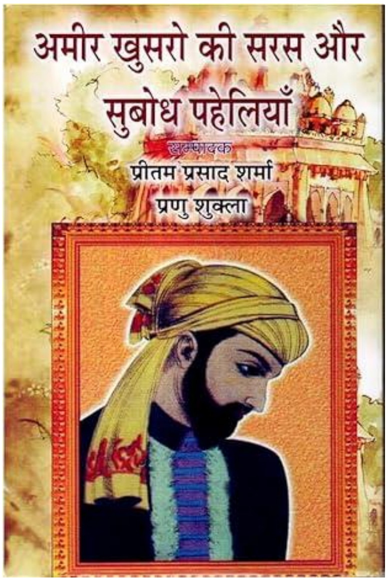

खड़ी बोली के वख्यात और स्वनामधन्य गणेश क व अमीर खुसरो का मूल नाम अबुल हसन था। 'अमीर' का उन्हें खताब मला था और खुसरो उनका तखल्लुस था । कालान्तर में यह नाम च र्चत हो गया और 'भारतेंदु ' की भाँति इस नाम की बहुत ख्याति हुई। हज़रत निजामुद्दीन औ लया के शा गर्द अमीर ख़ुसरो फ़ारसी के साथ-साथ हिंदवी (हिंदी) अरबी, तुर्की आदि भाषाओं के भी जानकार थे। ख़ुसरो बहुज्ञ और बहुश्रुत दोनों थे बाल्यकाल से ही वे साहित्य साधना में तल्लीन हो गए। ख़ुसरो ने असंख्य पहे लयों, मुकरियों, निस्बतों की रचना की। उनकी पहे लयाँ और मुकरियाँ आज भी कही सुनी और सराही जाती हैं। देश-प्रेम की भावना से ओत-प्रोत क वता के सर्जक अमीर ख़ुसरो को भारत-भू म पर बहुत गर्व था। वे स्वयं को हिंदुस्तान की तूती कहते थे। वे कहते थे "अगर मुझे जानना चाहते हो तो हिंदवी में पूछो, मैं तुम्हें अनुपम बातें बता सकूँगा।" ऐसा अनोखा उदाहरण वश्व साहित्यध र्मयों में मलता है।

प्रकाशक: साहित्यागार

आह्वान संख्या: 891.431 S531A

अ धकरण संख्या: 158053

3. प्रियदर्शी सम्राट अशोक महान/ हरिदास रामजी शेंडे

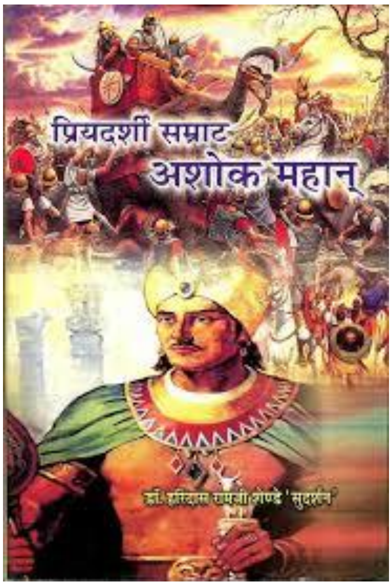

इतिहास में सम्राट् अशोक को दो चीजों के लए याद कया जाता है—एक, क लंग के युद्ध के लए और दूसरा, भारत के बाहर की दुनिया में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लए। अपने आरं भक दिनों में अशोक बहुत क्रूर राजा था। अपने निष्कंटक राज्य के लए उसने अपने सौतेले भाइयों को मरवा दिया था। उसके इन क्रूर कारनामों के कारण उसे 'चंड अशोक' कहा जाने लगा था। उसने एक के बाद एक राज्य जीता और साम्राज्यवाद की अपनी महत्त्वाकांक्षा को सींचता रहा। उसका राज्य भारत के पार द क्षण ए शया और प र्शया तक को छूने लगा। आ खर क लंग का युद्ध हुआ। इसमें भी अशोक को जीत मली। ले कन इस युद्ध में दोनों पक्षों के एक-एक लाख लोग मारे गए और इससे भी ज्यादा बेघर हो गए। क लंग युद्ध में हुए महा वनाश से वच लत हो गया। उसने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लया। उसने जनकल्याण के कार्य आरंभ कर दिए और राजसी भोग- वलास का परित्याग कर दिया। उसने अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघ मत्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लए सम पत कर दिया। सम्राट् अशोक के शौर्य, युद्धकौशल वजय अ भयानों और दानव से मानव बनने की मा र्मक कथा प्रस्तुत करनेवाली एक पठनीय पुस्तक।.

प्रकाशक: साहित्यागार

आह्वान संख्या: 954.01 S539P **अ धकरण संख्या: 158054**

4. वलक्षण ग णतज्ञ श्रीनिवास रामानुजन/मंजुल सक्सेना

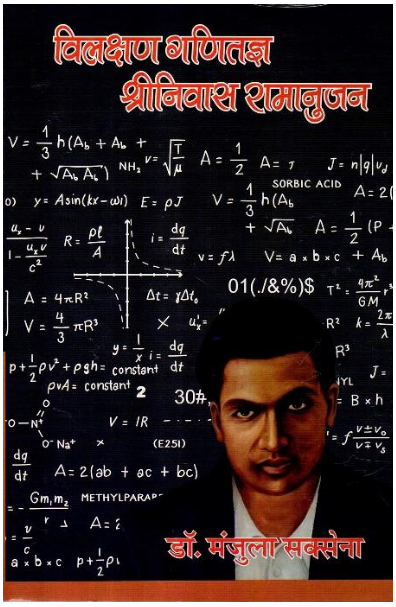

मात्र बत्तीस वर्ष के छोटे-से, साथ ही अभावों से जूझते हुए जोवन में भी वश्वभर के ग णत के उच्चतम शखरों को छूने वाले महान्, वलक्षण ग णतज्ञ श्रीनिवास रामानुजन को गणना महानतम युग- निर्माताओं में की जाती है। उन्होंने वैश्विक ग णतीय संसार को ऐसा अद्भुत योगदान दिया, जिसे परिभा षत करने तथा उनके अनेक ग णतीय सूत्रों को सद्ध करने के लए आज भी सैकड़ों ग णतज्ञ प्रयासरत हैं। आज भी वे प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। वस्तुतः उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को जानकर कसी मानव की प्रतिभा की अपार संभावनाओं को देख चमत्कृत हुए बिना नहीं रहा जा सकता। सुप्र सद्ध ग णतज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की वलक्षण प्रतिभा को कैम्ब्रिज के प्रो. जी.एच. हार्डी ने पहचाना था और वश्व के ग णत-पटल पर उसे उजागर कया था। हमारे देश के महान् राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपने संभाषण (इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन नंबर थ्योरी फ़ॉर सक्योर कम्युनिकेशन- 20 दिसंबर, 2003) में रामानुजन द्वारा ग णतीय क्षेत्र में दिए गए योगदान को आज के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासं गक होने के बारे में पर्याप्त प्रकाश डाला था, साथ ही बताया था क "कैम्ब्रिज के अति प्र सद्ध ग णतज्ञ प्रो. जी.एच. हार्डी ने इस क्षेत्र के व भन्न प्रतिभावान व्यक्तियों को 100 अंक के पैमाने से आँका है। अ धकतर ग णतज्ञों को उन्होंने 100 में से 30 के निकट अंक दिए हैं, कुछ व शष्ट व्यक्तियों को 60 अंक दिए हैं। केवल रामानुजन को उन्होंने पूरे 100 में से 100 अंक दिए हैं। इससे बढ़कर रामानुजन अथवा ग णत में भारतीय वरासत की और क्या प्रशंसा हो सकती है।

प्रकाशक: साहित्यागार

आहवान संख्या: 925.1 S272V   अ धकरण संख्या: 158055

5. आजाद कथा /प्रेमचंद

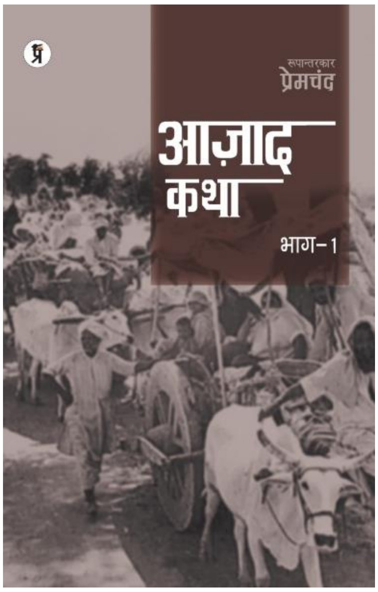

हिंदी के महान उपन्यासकार और कथा सम्राट प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में दर्ज कराया। उन्होंने अनेक उपन्यास लखे, जिनमें रंगभू म, कर्मभू म और गोदान मुख्य रूप से वख्यात हैं। प्रेमचंद ने उर्दू से हिंदी भाषा में भी रूपांतरण कया है। जिसमें "आज़ाद कथा" उनके द्वारा रूपांतरित उपन्यासों में से एक है इसके रचयिता 'पं डत रतन नाथ 'सरशार' हैं। जिनकी सबसे बड़ी रचना 'फसान-ए-आज़ाद' तीन हज़ार पृष्ठों में फैली है। यह उपन्यास सामंती समाज की पतनशीलता के साथ-साथ आधुनिक वचारों के आगमन को भी बहुत सुंदरता से प्रस्तुत करता है। मानव स्वभाव और संबंधों की सजीव और सुन्दर प्रस्तुति के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य का पुट और भाषा की गतिशीलता उपन्यास को महत्त्वपूर्ण बनाते हैं। यह उपन्यास हिंदी में उपलब्ध नहीं है, ले कन प्रेमचंद ने " आज़ाद कथा" नाम से इसका एक सं क्षप्त रूपांतरण कया। प्रेमचंद की लेखन शैली तो क़ाबिले तारीफ़ और उम्दा कस्म की है ही, ले कन रूपांतरण भी कुछ कम अनोखा नज़र नहीं आता है। उन्होंने 'टॉलस्टॉय को कहानियाँ', गाल्सवर्दी के तीन नाटकों हड़ताल, चाँदी की डबिया और न्याय नाम से भी अन्य अनुवाद कए। ले कन अनुवादित रचनाओं में ' आज़ाद कथा' बहुत ही प्र सद्ध हुआ। प्रेमचंद को साहित्य की दुनिया का बादशाह कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

प्रकाशक:प्रभाकर प्रकाशन

आह्वान संख्या: 891.433 P925A

अ धकरण संख्या: 158059

6. युग-पुरुष वीर सावरकर/अशोक कौ शक

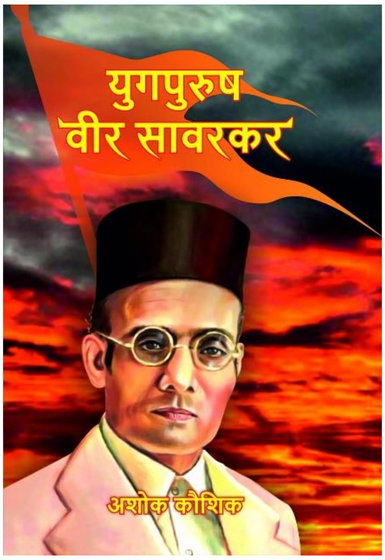

भारतीय क्रांतिकारी इतिहास में स्वातंत्र्यवीर वनायक दामोदर सावरकर का व्यक्तित्व अप्रतिम गुणों का द्योतक है। 'सावरकर' शब्द ही अपने आपमें पराक्रम, शौर्य और उत्कट देशभक्ति का पर्याय है। अपनी आत्मकथा मेरा आजीवन कारावास में उन्होंने जेल-जीवन की भीषण यातनाओं—ब्रिटिश सरकार द्वारा दो-दो आजीवन कारावास की सजा सुनाए जाने के बाद अपनी मान सक स्थिति, भारत की व भन्न जेलों में भोगी गई यातनाओं और अपमान, फर अंडमान भेजे जाने पर जहाज पर कैदियों की यातनामय नारकीय स्थिति, कालापानी पहुँचने पर सेलुलर जेल की वषम स्थितियों, वहाँ के जेलर बारी का क्रूरतम व्यवहार, छोटी-छोटी गलतियों पर दी जानेवाली अन शारीरिक यातनाएँ, यथा—कोड़े लगाना, बेंत से पटाई करना, दंडी-बेड़ी लगाकर उलटा लटका देना आदि का वर्णन मन को उद्वे लत कर देनेवाला है। वषम परिस्थितियों में भी कैदियों में देशभक्ति और एकता की भावना कैसे भरी, अनपढ़ कैदियों को पढ़ाने का अ भयान कैसे चलाया, कस प्रकार दूसरे रचनात्मक कार्यों को जारी रखा तथा अपनी दृढ़ता और दूरद र्शता से जेल के वातावरण को कैसे बदल डाला, कैसे उन्होंने अपनी खु फया गति व धयाँ चलाईं आदि का सच्चा इतिहासव र्णत है। इसके अतिरिक्त ऐसे अनेक प्रसंग, जिनको पढ़कर पाठक उत्तेजित और रोमां चत हुए बिना न रहेंगे। वपरीत-से- वपरीत परिस्थिति में भी कुछअच्छा करने की प्रेरणा प्राप्त करते हुए आप उनके प्रति श्रद्धानत हुए बिना न रहेंगे।.

प्रकाशक:सुर्य भारती प्रकाशन

आहवान संख्या: 928.9143 K21Y   अ धकरण संख्या: 158071

7. कश्मीर : आतंकवाद की पूरी कहानी'/राकेश कुमार,

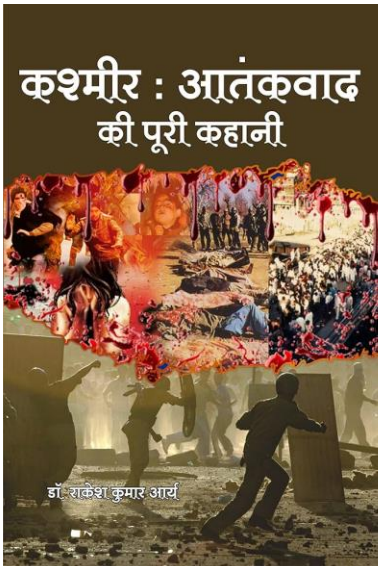

स्तक के वषय में कश्मीर का दर्द कतना पुराना है? इसके सच को देश के लोगों से छुपा कर रखा गया। अभी कुछ समय पूर्व ही जब कश्मीर से हिंदुओं का सामूहिक पलायन कराया गया तो उसका भी पूरा सच लोगों के सामने नहीं आने दिया। धरती का स्वर्ग कही जाने वाली कश्मीर उसके मूल निवा सयों अर्थात हिंदुओं के लए ही नरक स्थली बना दी गई। जब 1990 में हिंदुओं के साथ कए गए अत्याचारों के सच को 'द कश्मीर फाइल्स' के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत कया गया तो अनेक लोगों की आंखों में आंसू आ गए। तब सारे देश को यह सच पता चला क वहां बंद दरवाजों के भीतर क्या-क्या होता रहा था? डॉ राकेश कुमार आर्य के द्वारा लखी गई यह पुस्तक ' कश्मीर : आतंकवाद की पूरी कहानी' - लेखक के नैतिक साहस और अनुसंधानात्मक सोच शोधपूर्ण चंतन को प्रकट करती है। जिन्होंने इस पुस्तक के माध्यम से हमें यह बताने का सराहनीय प्रयास कया है क कश्मीर का दर्द कल परसों का दर्द नहीं है, बल्कि यह सदियों का दर्द है।

प्रकाशक: साहित्यागार

आह्वान संख्या: 363.3250546 A796K

अ धकरण संख्या: 158093

8. ससोदिया राजवंशी का दारोगा/सुंदरलाल

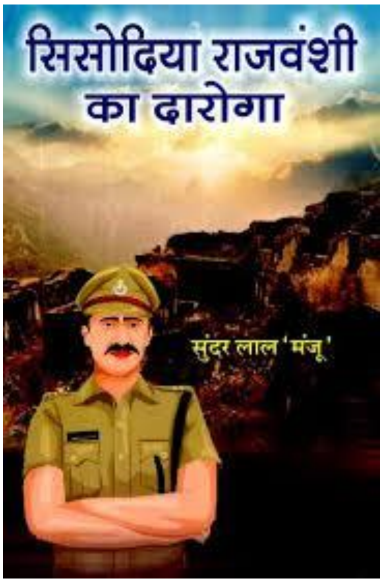

पु लस और साहित्य दोनों ही अलग-अलग क्षेत्र हैं तथा पु लस अ धकारी अपनी व्यस्तताओं के कारण साहित्य व कला के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन नहीं कर पाता पर कुछ अ धकारियों पर यह बात लागू नहीं होती है। राजस्थान पु लस में उपनिरीक्षक के पद पर कार्यरत सुंदर लाल पु लस अ धकारी के साथ-साथ क व और साहित्यकार भी हैं। उनके तीन काव्य संग्रह 1. बणी-ठणी 2. सन 2020 : एक पहेली 3.कलम का सपाही जो पूर्व में प्रका शत हो चुके हैं । उप निरीक्षक की रचना प्रकृति प्रेम, जीवन दर्शन, भक्ति, वरह वेदना आदि वषयों पर केंद्रित हैं। कोरोना काल में जब संपूर्ण समाज पर, मानवता पर खतरा मंडरा रहा था तब उप निरीक्षक ने राज्य के को वड डेडीकेटेड अस्पताल आरयूएचएस में लगभग एक साल तक अपनी उल्लेखनीय सेवाएं दी। ससोदिया राजवंशी का दारोगा उपन्यास आरयूएचएस ड्यूटी के दौरान ही लखा गया। इस उपन्यास में को वड महामारी का बड़ा ही मा र्मक वर्णन कया गया है। को वड संक्र मत लाशों का अंतिम संस्कार भी पु लस प्रशासन की निगरानी में कया जाता था उसी दौरान मजदूरों का पलायन हुआ ।उपन्यास में मजदूरों के पलायन का बड़ा ही हृदय वदारक वर्णन कया है। उप निरीक्षक ने अपनी रचना में समाज को आईना दिखाने के साथ-साथ सामाजिक आ र्थक व राजनीतिक परिवेश पर नजर रखते हुए आधुनिक भौतिकवादी संस्कृति पर कटाक्ष करते हुए प्रकृति की और लोट चलने का आह्वान कया है।

प्रकाशक: साहित्यागार

आह्वान संख्या: 891.433 L193S

अ धकरण संख्या: 158098

9.ब्रह्माण्ड की उत्प त्त एवं श्रेष्ठ मानव जीवन/महेश चंद बंसल

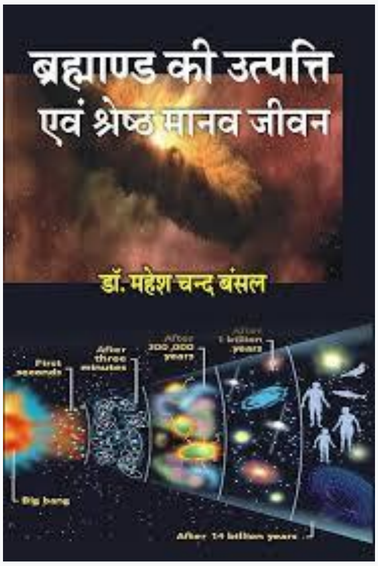

इस उल्लेखनीय पुस्तक में लेखक ने सकारात्मक व आध्यात्मिक सोच का समावेश करते हुए ब्रह्मा ाण्ड की उत्प त्त से लेकर मोक्ष की प्राप्ति के मार्गों एवं तत्वों को समय के साथ अर्जित ज्ञान और उत्कृष्ट वैज्ञानिक प्रकार से सामंजस्य स्था पत करते हुए गागर में सागर भरने की नवाचारपरक भागीरथ पहल की है। लेखक ने वेद, पुराण, भागवत गीता, मनुस्मृति आदि सनातन ग्रन्थों को आधार मानते हुए वज्ञान के कठिन सद्धान्तों, अवधारणाओं, वैज्ञानिक तथ्यों को बहुत ही सरल, सहज, सरस, भाषा मे आमजन तक पहूँचाने का प्रयास कया है। लेखक द्वारा पुस्तक में भौतिकी रसायन, जीव वज्ञान के साथ-साथ ज्योतिष, खगोलशास्त्र आदि वज्ञान के वषयों सद्धान्तों का सम्मिश्रण करते हुए मनुष्य के अवचेतन मस्तिष्क तक पहूँचाने का कार्य कया है। नि:संदेह यह पुस्तक एक ऐसा उत्कृष्ट शोध कार्य है जो वश्व के जिज्ञासु, ज्ञान पपासु वर्ग के लये एक ऐसा माध्यम बनेगा जिसके द्वारा वे वैज्ञानिकता व आध्यात्मिकता के मध्य सामंजस्य बैठाते हुए मन की शक्ति, प्रसन्नता, सफलता, समृद् ध और शांति को प्राप्त करते हुए जीवन में गुणवत्ता ला सकते हैं एवं अपने जीवन को और उच्चतर बना सकते हैं तथा जीवन के नए क्षतिज को पा सकते हैं। —पंकज ओझा क्रस्, संयुक्त शासन स चव, कला एवं संस्कृति, राजस्थान

प्रकाशक: साहित्यागार

आहवान संख्या: 179.10113 B212B

अ धिकरण संख्या: 158120

10.भारत की महान सांस्कृतिक धरोहर/देवेन्द्र संह आर्य

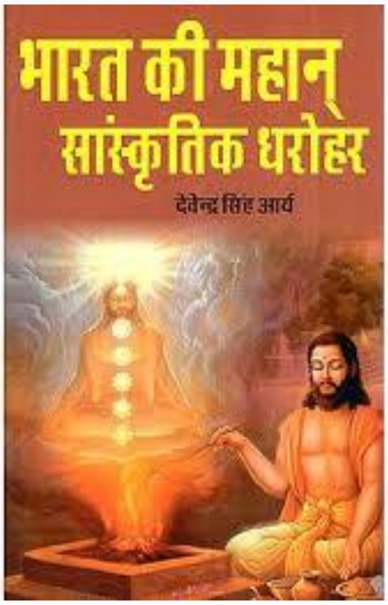

भारतीय संस्कृति ईक्षण, परीक्षण, निरीक्षण और समीक्षण की संस्ृकृति है। यह मनुष्य को स्थूल से सूक्ष्म की ओर, दृश्य से अदृश्य की ओर, परिवर्तनशील से अपरिवर्तनशील की ओर लेकर चलने का महान् कार्य करती है। भंदन में संसारभर के वद्वानों ने गीत लखे हैं, लेख लखे हैं। अपने अत्यंत मूल्यवान रत्नज डत मुकुटों को इसकी अत्यंत शोभायमान कांति के समक्ष तुच्छ समझकर सहर्ष इसके श्रीचरणों में सम र्पत कर दिया है। इसके गुणगान में लोगों का शब्दकोश समाप्त हो गया। अनेक मूल्यवान हीरों से भरा हुआ धन का कोश समाप्त हो गया। जिन लोगों ने यह कहा क 'कुछ बात है क हस्ती मटती नहीं हमारी'.... उन्हें भी पता चल गया क भारत की हस्ती के ना मटने का कारण इसका सांस्कृतिक वैभव और गौरव है। क्यों क इसकी जड़ें बहुत गहरी हैं। इतनी गहरी क पाताल के पाताल को भी खोदा और खोजा जाए तो वहाँ भी इसी का गुण-वंदन होता हुआ परिल क्षत होता है। यह उस परम पता परमेश्वर! सच्चिदानंदानंतस्वरूप! शुद्ध-बुद्ध-मुक्त स्वभाव! नि र्वकार! सर्वांतर्यामी! सर्वाधार! सकल जगत् के उत्पादक! करुणा-वरुणालय! निराकार! सर्वशक्तिमान! न्यायकारिन! समस्त संसार की सत्ता के आदिमूल! चेतनों के चेतन! सर्वज्ञ! जगत्पिता की कृपा का ही कमाल है क उसने अपने अनंत ऐश्वर्य में से ज्ञान रूपी ऐश्वर्य की प्रचुर मात्रा वद्वान् लेखक श्री देवेंद्र संह आर्य जी के भीतर भरी है। जिन्होंने भारतीय संस्कृति के प्रति अपने समर्पण भाव को अ भव्यक्ति देते हुए इस महान् ग्रंथ की रचना की है।

प्रकाशक: साहित्यागार

आहवान संख्या: 306.40954 A796B

अ धकरण संख्या: 158141